लिए। वो विख बिगर रह ना सके। अगर कोई पवित्र बनते हैं तो छोड़ देते हैं। भगवानुवाच्य काम महाशत्रु है। इस पर जीत पहनेंगे तो जगतजीत बनेंगे। तो पवित्र बनने लिए बाप को ज़रूर याद करना पड़े। अभी तो टाइम दिया जाता है कि अभी भल सुबह को याद करो फिर जब प्रैक्टिस हो जाए तो बैठे–2 याद करते रहेंगे। जैसे मनुष्य स्नान करते समय राम–2 जपते रहते हैं। तो तुमको जाप नहीं, याद करना है। बाप को याद करने से स्वर्ग याद आ जावेगा। इसको कहा जाता अल्प और बे। अल्फ माना अल्लाह, बे माना बादशाही। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करेंगे तो अनेक जन्मों के जो पाप हैं वो दग्ध होंगे। आत्मा ही याद है। अभी नाम पड़ा है पापात्मा। तो भला पतित–पावन कौन? तो कह देते, पतित–पावन सीता–राम। वह तो ठीक है, तुम सीताएँ हो ना; परन्तु पीछे लिखा है रघुपति राघव राजा–राम। तो तुम गाँधी को भी इस बात पर समझाती थीं। तुम चिट्ठियाँ लिखती थीं शुरू से लेकर; परन्तु बन्दर बुद्धि कुछ समझते नहीं हैं। बंदर हैं ना। यह ज्ञान है रत्न; परन्तु बंदर क्या जाने इन रत्नों से। मनुष्य तो कह देते कृष्ण ने जुआ खेलना सिखाया पांडवों और कौरवों को। वास्तव में ऐसे है नहीं कि पाण्डवों ने जुआ खेला और द्रौपदी को दाव में रखा। तो आजकल भी जुआ खेलते हैं तो स्त्री को दाव में रखते हैं। पूछो कि ऐसे क्यों करते हो? तो कहते– वाह! भगवान ने जुआ खेलना सिखाया था ना। फिर कहते, द्रौपदी को 5 पति थे। अरे, हिन्दू नारी हिन्दू को 5 पति कहाँ से आए? तो आजकल चक्राता तरफ एक–2 माई 5 पति करती है। यह सब बातें कहाँ से आई? शास्त्रों से। कृष्ण के मंदिर में चौपड़ रखते हैं। वह कृष्ण का तो वो ही नाम–रूप तो एक ही बार दिखाई पड़ सके; क्योंकि श्री कृष्ण को भी पुनर्जन्म में तो आना ही है ना। तो किसी से भी पूछो, कृष्ण कहाँ है तो कहेंगे, सर्वव्यापी है। सब जगह कृष्ण ही कृष्ण है। अच्छा, राधे कहाँ है? तो उसके लिए भी कह देते, सर्वव्यापी है। वृंदावन से एक बच्चा आया है। तो वह कहता था सब जगह राधे ही राधे है। अगर पूछो, इस कहने से क्या होगा? तो कहते हैं मुक्ति में जावेंगे; क्योंकि राधे जीवनमुक्ति में थी ना। राधे को जितना याद करते हैं उतना कृष्ण को नहीं। अच्छा चलो, कृष्ण को नहीं? तो कहेंगे, राधे का नाम पहले है। ज्ञान का सागर जो प०पि०प० है उनकी मत पर ज़रूर चलना पड़े। बच्चे का फर्ज़ है बाप की मत पर चलना; क्योंकि बाप बच्चे की सेवा करते हैं ना। पहले बच्चे की बाप संभाल कर 4/5 वर्ष का करते हैं। फिर बच्चा जाता है टीचर के पास तो टीचर शिक्षा देते हैं, मैनर्स सिखाते हैं। स्कूल में मैनर्स पर भी नम्बर मिलते हैं ना। लिखते हैं ना, गुड, बेटर, बेस्ट। जो बच्चा अच्छा पढ़ता है उसके मैनर्स भी अच्छे होते हैं। इसलिए पढ़ाई पर ज़ोर देते हैं। यह फिर पढ़ाई भी है तो व्यापार भी है। व्यापार क्यों है? जैसे व्यापार में मटा–सटा करते हैं। तो यहाँ भी ऐसे है। यहाँ कोई पैसे की बात नहीं है। यहाँ तो सिर्फ बाप का बनना है। देखो, मम्मा का भी मिसाल है ना। मम्मा पास कोई धन थोड़े ही था। सिर्फ बाप की बनी तो सतयुग की महारानी बनी। कन्याओं के पास पैसा तो होता नहीं है; क्योंकि कन्या जब शादी करती है तो हाफ पार्टनर बनती है पति की। आजकल तो हाफ पार्टनर की भी बात नहीं रही। आजकल तो शादी करते ही हैं सिर्फ कनयुगल(कॉनजुगल) राइट

सेन्टर होते हैं। वृद्धि हो(ती) जावेगी। देखो ना पहले एक ब्रह्मा था ना। पीछे दो हुए। पीछे वृद्धि होती गई है। तो आगे भी वृद्धि होती जावेगी। कहते हैं ना सेकण्ड में जीवनमुक्ति राजा जनक को जीवनमुक्ति मिली थी ना। कब? जब महाभारत लड़ाई लगी थी। तो अब जीवनमुक्ति मिल रही है। बाप का बने और जीवनमुक्ति तो मिल गई; क्योंकि सतयुग में प्रजा भी तो जीवनमुक्त होगी। बाकी है ऊँच पद पाने लिए पुरुषार्थ। सतयुग में तुम यहाँ की प्रालब्ध भोगते हो। वहाँ कोई विकर्म होता नहीं; क्योंकि वहाँ माया है नहीं। विकर्म तब शुरू होते हैं जब वाममार्ग में जाते हैं। उनकी निशानी देखनी हो तो जाओ जगन्नाथपुरी में। जगन्नाथ तो वास्तव में ल०ना० को कहा जाता। तो मंदिर में अंदर देवताओं की ताज वाली मूर्ति है और बाहर गंदे चित्र दिखाय हैं। वो सन्यासी फिर कहते हैं देवताएँ भी विकारी थे। जाकर देखो मंदिर के ऊपर। तो भारतवासियों ने खुद को खुद चमाट मारी है। बाबा कहते हैं मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। जैसे कल्प पहले आया था वैसे ही आऊँगा। ऐसे थोड़े ही सर्वशक्तिवान हूँ तो इसका मतलब कुछ भी कर सकता हूँ। आर्यसमाजियों ने लिखा था कि इनको (ब्रह्मा को) ईश्वर समझते हो तो हम एक मक्खी मार देते हैं, जिंदा कर देवे तो हम जाने। अरे मुर्ख, यह तो समझते नहीं कि बाप कहते हैं कि मैं तो जो पहले नम्बर का पतित है उसके तन में आता हूँ पावन बनाने। पूरा अर्थ ना समझने कारण उलटा–सुलटा बोलते रहते हैं। कोई नई बात नहीं है। कल्प पहले भी गाली खाई थी। कहते हैं ना जो कलंकीधर बनते हैं तो उनपर कलंक लगते हैं। तो कृष्ण लिए भी कह देते कि जामवंती को, सत्यभामा को भगाया आदि... तो कृष्ण पर कलंक लगाया है ना। फिर कहते चौथ का चंद्रमा कृष्ण ने देखा तो कलंक लगा। यह सब ..... फिर जी पड़ता है। एफिजी दुश्मन की बनाई जाती है ना। रावण की एफिजी बनाते हैं तो दुश्मन ठहरा ना। दशहरे के दिन लंका लूटने जाते हैं। कहते हैं रावण मर गया और हमने लंका लूटी। वास्तव में लंका तो तुम लूटते हो। यही भारत सोने की द्वारिका बन जाता है। अभी तो सारी दुनिया पर रावण का राज्य है। जब यह विनाश हो जाता है तो तुम्हारा राज्य आ जाता है। तुमने यह भी सा० किया है कि कैसे हैलीकोप्टर में जाए सोना ले आते हैं। इस समय टन्स के टन्स सोने खरीदते हैं ना। तो इतना सोना है तो सही ना। तो यह सब तुम्हारे काम आएगा। कितनी मीठी–2 बातें हैं। तुम इस समय इतनी तो कमाई कर लेते हो जो तुम सतयुग में हीरों के, सोने के महल बनावेंगे। इस समय तो आर्टीफिशियल साहुकारी है; क्योंकि सब खतम हो जा(ना) है। सतयुग में ही रियल साहुकारी होती है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे लकी ज्ञान सितारों, ज्ञान सितारे हो ना। जैसे (वह) बत्तियाँ हद के माण्डवे को रोशनी देते हैं, तुम बेहद के माण्डवे को रोशनी देते हो। भला इस माण्डवे में ड्रामा कौन सा चलता है? सुख–दुख, हार–जीत, गधाई–राजाई का। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ